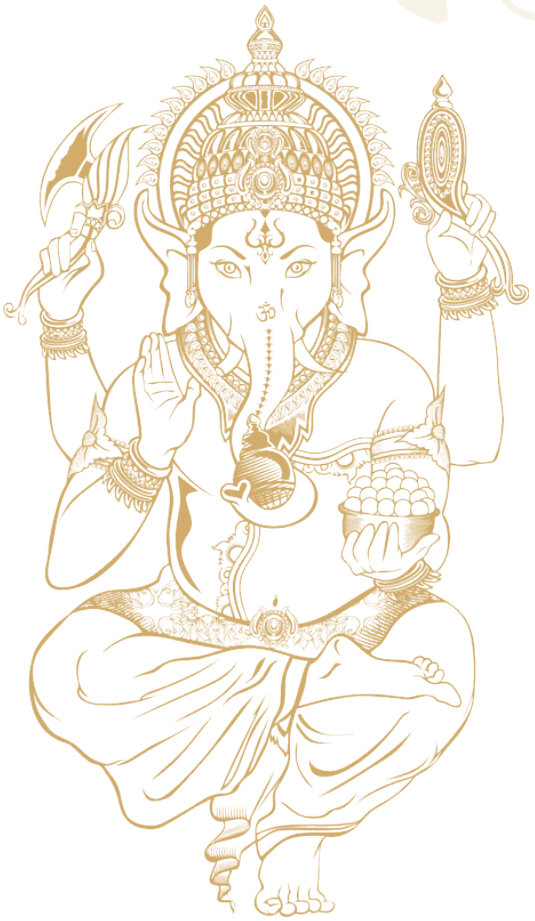

a

Ms.

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121809601

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121809601 Date: 04/04/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
02/12/1998	जन्म तिथि	20/11/1997
बुधवार	दिन	गुरुवार
घंटे 17:05:00	जन्म समय	12:05:00 घंटे
घटी 25:01:08	जन्म समय(घटी)	12:56:01 घटी
India	देश	India
Bilaspur	स्थान	Bilaspur
31:18:00 उत्तर	अक्षांश	31:18:00 उत्तर
76:48:00 पूर्व	रेखांश	76:48:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:22:48	स्थानिक संस्कार	-00:22:48 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:04:32	सूर्योदय	06:54:35
17:19:40	सूर्यास्त	17:22:10
23:50:20	चित्रपक्षीय अयनांश	23:49:34

वृष	लग्न	मकर
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	शनि
मेष	राशि	कर्क
मंगल	राशि-स्वामी	चन्द्र
कृतिका	नक्षत्र	पुष्य
सूर्य	नक्षत्र स्वामी	शनि
1	चरण	4
शिव	योग	शुक्ल
वणिज	करण	वणिज
अ-अश्विनी	जन्म नामाक्षर	डा-डाली
धनु	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृश्चिक
क्षत्रिय	वर्ण	विप्र
चतुष्पाद	वश्य	जलचर
मेष	योनि	मेष
राक्षस	गण	देव
अन्त्य	नाड़ी	मध्य
गरूड़	वर्ग	श्वान

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
सूर्य 4वर्ष 6मा 18दि	13:30:35	वृष	लग्न	मक	17:38:21	शनि 2वर्ष 4मा 22दि
राहु	16:14:24	वृश्चि	सूर्य	वृश्चि	04:08:44	शुक्र
20/06/2020	29:53:25	मेष	चंद्र	कर्क	14:59:13	12/04/2024
21/06/2038	08:58:52	कन्या	मंगल	धनु	14:31:56	12/04/2044
राहु 03/03/2023	14:13:52	वृश्चि व	बुध	वृश्चि	24:01:01	शुक्र 13/08/2027
गुरु 27/07/2025	24:56:07	कुंभ	गुरु	मक	21:11:45	सूर्य 12/08/2028
शनि 02/06/2028	24:29:51	वृश्चि	शुक्र	धनु	20:21:48	चन्द्र 13/04/2030
बुध 20/12/2030	03:35:36	मेष व	शनि व	मीन	20:18:59	मंगल 13/06/2031
केतु 08/01/2032	01:32:49	सिंह व	राहु व	सिंह	22:58:00	राहु 13/06/2034
शुक्र 08/01/2035	01:32:49	कुंभ व	केतु व	कुंभ	22:58:00	गुरु 11/02/2037
सूर्य 02/12/2035	15:47:56	मक	हर्ष	मक	11:28:49	शनि 12/04/2040
चन्द्र 02/06/2037	06:16:34	मक	नेप	मक	03:50:36	बुध 11/02/2043
मंगल 21/06/2038	14:09:52	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	11:21:10	केतु 12/04/2044

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:50:20 चित्रपक्षीय अयनांश 23:49:34

लग्न-चलित

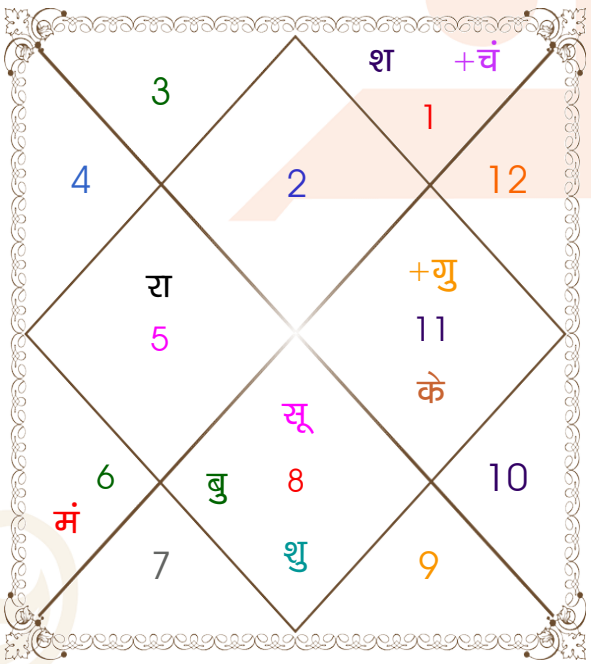

लग्न-चलित

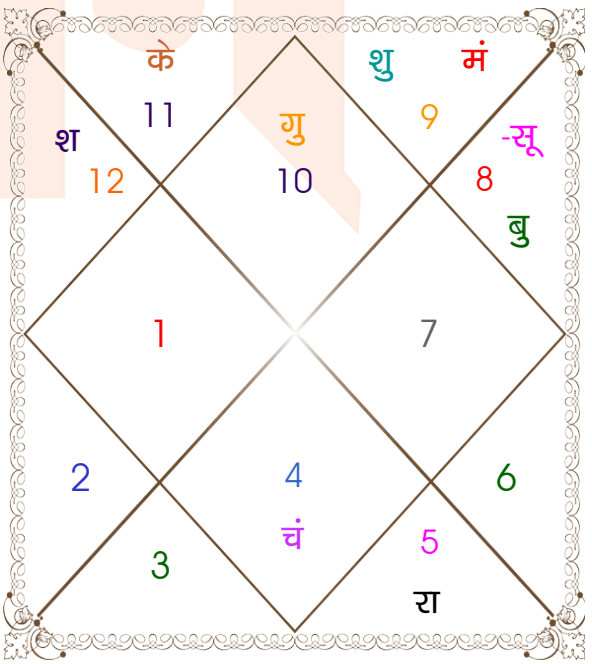

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मेष	मेष	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	चन्द्र	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	मेष	कर्क	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	26.50		

कुल : **26.5 / 36**

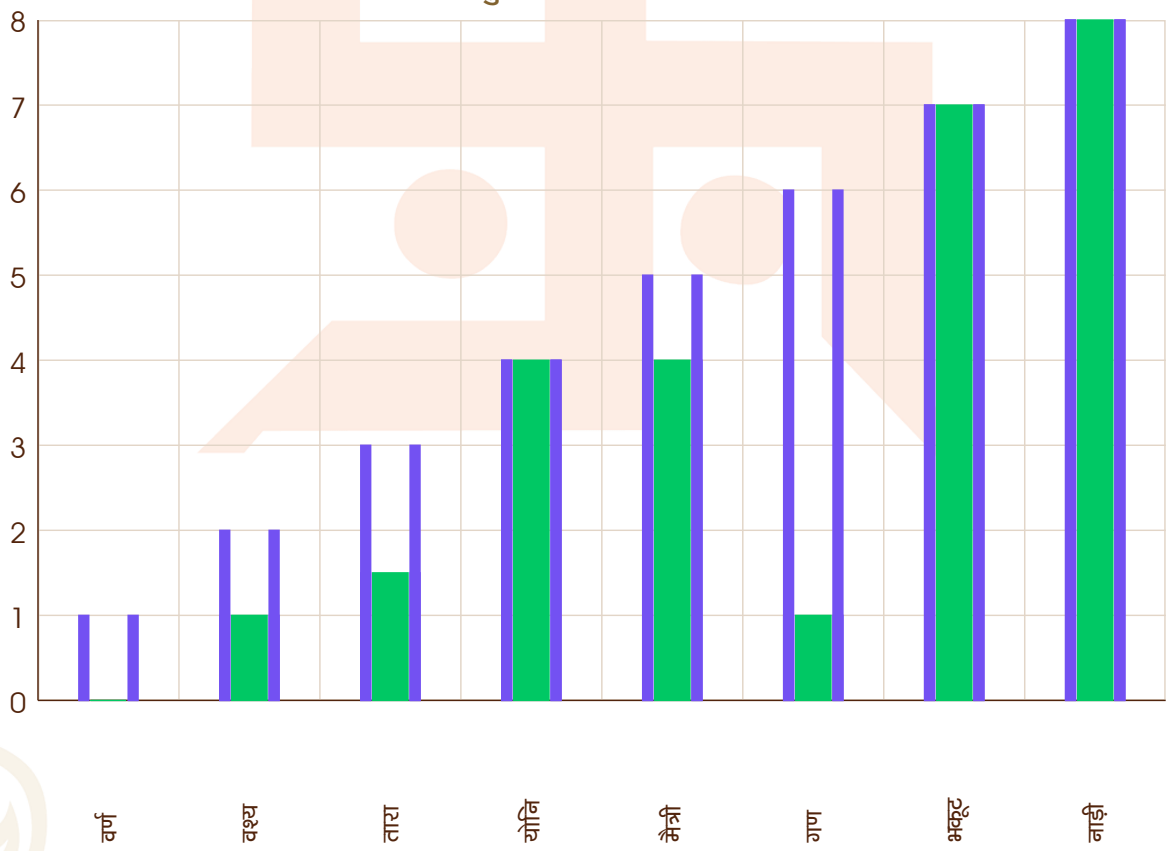

अष्टकूट मिलान

a का वर्ग गरूड़ है तथा Ms. का वर्ग श्वान है। इन दोनोa वर्गोंa मेa परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार a और Ms. का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

a मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली मेa पंचम् भाव मेa स्थित है।

Ms. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली मेa द्वादश भाव मेa स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली मेa द्वादश भाव मेa धनु, मेष तथा कर्क राशि का मंगल स्थित हो तब मंगली दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल Ms. कि कुण्डली मेa द्वादश भाव मेa धनु राशि मेa स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली मेa 1,4,7,8,12 वेa भावोa मेa हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावोa मेa होa तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि a कि कुण्डली मेa द्वादश भाव मेa स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

a तथा Ms. मेa मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवa मंगलीक दोष न होने के कारण दोनोa का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

a का वर्ण क्षत्रिय तथा Ms. का वर्ण ब्राह्मण है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीa है। जिसके कारण दोनोa के बीच सदैव अहa का टकराव होता रहेगा। साथ ही Ms. हमेशा श्रेष्ठता मनोग्रंथि से ग्रस्त रहेंगी तथा स्वयa को अपने पति से हमेशा अधिक बुद्धिमान एवa चतुर समझेंगी। श्रेष्ठता की यही भावना a एवa बच्चोa के विकास मेa बाधक साबित हो सकती है।

वश्य

a का वश्य चतुष्पद अर्थात पशु है एवa Ms. का वश्य जलचर है अतः यह मिलान औसत मिलान होगा। पशु एवa जलचर दोनोa का साथ-साथ प्रकृति मेa सह अस्तित्व होता है। इसलिये दोनोa के स्वभाव, गुण, व्यवहार एवa पसंद/नापसंद अलग-अलग होंगे। जिसके फलस्वरूप दोनोa शायद ही कभी एक-दूसरे को नुकसान पहुंचायेंगे। a एवa Ms. दोनोa अपने-अपने अलग कर्त्तव्य एवa उत्तरदायित्व निभाते रहेंगे। इस मिलान मेa a एवa Ms. दोनोa एक-साथ प्रेमपूर्वक अपने कर्त्तव्य एवa उत्तरदायित्व का निर्वहन करते रहेंगे।

तारा

a की तारा प्रत्यरि तथा Ms. की तारा साधक है। a की तारा प्रत्यरि होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। विवाह के उपरांत a कालांतर मेa बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवa नैतिक पतन का शिकार हो सकता है। उसके अवैध संबंध भी हो सकते हैं। परिणामस्वरूप Ms. को काफी कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। भविष्य मेa तनाव, निराशा, अवसाद एवa पीड़ा के कारण उसका झुकाव अध्यात्म की ओर हो सकता है।

योनि

a की योनि मेष है तथा Ms. की योनि भी मेष है। अर्थात दोनोa की योनि समान ही है। दोनोa योनि के बीच परस्पर मित्रता का संबंध है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनोa के बीच अगाध प्रेम होगा। दोनोa हमेशा एक दूसरे को समय-समय पर अपना सहयोग देते रहेंगे जिससे इनका पारिवारिक एवa वैवाहिक जीवन अत्यंत सौहार्द्र एवa प्रेमपूर्वक बीतेगा। सोच एवa समझदारी मेa समानता होने के कारण परस्पर वैचारिक मतभेद नहीa रहेंगे। इस प्रकार आपसी विश्वास रहने के कारण आपका वैवाहिक जीवन अच्छा रहेगा। आप दोनोa पारिवारिक एवa वैवाहिक जीवन मेa शांति का अनुभव करेंगे। मन मेa हर्षोल्लास की भावना बनी रहेगी। साथ ही परिवार मेa सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। धन का आगमन समय-समय पर होता रहेगा। जिसके कारण आप सुखी पारिवारिक एवa वैवाहिक जीवन व्यतीत करेंगे। दोनों आपसी समझबूझ के साथ जीवन मेa आने वाली किसी भी समस्या का समधान शीघ्र ही निकाल पाने मेa सझम होंगे। जिसके कारण इनका पारिवारिक जीवन अत्याधिक समृद्धिशाली रहेगा। इस प्रकार इनका वैवाहिक एवa पारिवारिक जीवन सुखी होगा एवa प्रगति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

मैत्री

अष्टकूट मिलान मेa ग्रह मैत्री कूट मेa a का राशि स्वामी Ms. के राशि स्वामी से मित्र का संबंध रखता है। जबकि Ms. का राशि स्वामी a के राशि स्वामी के साथ सम का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी के राशि स्वामी दूसरे साथी के लिए मित्र हो किंतु दूसरे साथी के राशि स्वामी अपने साथी के राशि स्वामी को सम मानते होa तो इसे भी उत्तम मिलान माना जाता है। ऐसी स्थिति मेa वैवाहिक सुख, शांति, खुशहाली, प्रेम एवa समृद्धि से युक्त जीवन होता है। अतः दम्पत्ति के बीच पारस्परिक समझ, विश्वास एवa सहयोग की भावना बनी रहेगी। दोनोa अपने घरेलू अथवा सामाजिक दायित्वोa का निर्वहन साथ मिलकर करते रहेंगे तथा सभी की प्रशंसा का पात्र बनेंगे।

गण

a का गण राक्षस तथा Ms. का गण देव है। अर्थात Ms. का गण a के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीa है। जिसके कारण a निर्दयी, कठोर, निष्ठुर एवa झगड़ालू हो सकते हैं। साथ ही a का Ms. के साथ क्रूर व्यवहार करने की संभावना बनी रह सकती है। पति-पत्नी, अक्सर कुत्ते-बिल्लियोa की भांति झगड़ा कर सकते हैa एवa परिवार मेa अक्सर अशांति का माहौल बना रहेगा। Ms. हमेशा हर कदम पर समझौता करने की कोशिश करती रहेगी ताकि दोनोa का संबंध बना रहे।

भकूट

a से Ms. की राशि चतुर्थ भाव मेa स्थित है तथा Ms. से a की राशि दशम भाव मेa स्थित है जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण a परिश्रमी एवa अपने व्यवसाय मेa काफी अच्छे होंगे। अपने व्यवसाय मेa लगन, निष्ठा एवa मेहनत के कारण उन्हेa सभी से प्रशंसा प्राप्त होती रहेगी। दूसरी ओर Ms. घरेलू होंगी। अपने आतिथ्य भाव एवa सब का ध्यान रखने तथा बड़ोa को सम्मान देने की प्रवृत्ति कारण परिवार के सदस्योa की आंखोa का तारा होंगी। पति-पत्नी के बीच असीम प्रेम, सहयोग एवa सामंजस्य बना रहेगा।

नाड़ी

a की नाड़ी अन्त्य है तथा Ms. की नाड़ी मध्य है। अर्थात दोनोa की नाड़ी समान नहीa है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। अन्त्य एवa मध्य नाड़ी दो महत्वपूर्ण जीवनी शक्तियोa पित्त एवa कफ की कारक हैं। जिसके कारण दम्पत्ति का परस्पर प्रेम, अनुकूलता, अच्छा भविष्य, सहयोग की भावना बनी रहेगी। आपकी संतान शक्तिशाली, बुद्धिमान, आज्ञाकारी एवa भाग्यशाली होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

a की जन्मराशि मेष तथा Ms. की जन्मराशि कर्क है। कर्क राशि जलतत्व एवa मेषराशि अग्नितत्व युक्त है तथा अग्नि एवa जल के मध्य नैसर्गिक रूप से असमता का भाव अधिक होता है। अतः आप दोनोa के मध्य असमानताएa अधिक रहेंगी। साथ ही a और Ms. मेa परस्पर भय का वातावरण रहेगा परन्तु समयानुकूल सम्मान के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। यही सम्मान एवa समानता का भाव इनको मधुर क्षण उपलब्ध कराएगा।

a और Ms. के राशि स्वामियोa की स्थिति परस्पर मित्र है। अतः सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए यह स्थिति शुभ रहेगी। यद्यपि Ms. बाहयरूप से मृदु एवa कोमल होगी परन्तु आंतरिक मन से वह सुदृढ रहेंगी तथा भावनाओa से लड़ने मेa सफल होगी तथा अपने प्रेमी के लिए बड़ा से बड़ा त्याग करने के लिए तत्पर रहेगी परन्तु a एक व्यावहारिक व्यक्ति होने के कारण उनकी इन भावनाओa को विशेष महत्व नही देंगे लेकिन Ms. उनके स्वार्थ एवa बचपने को समझकर उनसे सामंजस्य स्थापित करने मे समर्थ रहेंगी।

a और Ms. की राशियाa परस्पर 4-10 भाव मेa पड़ती हैं। यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से इनका सामान्य जीवन सुख एवa प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा तथा आर्थिक एवa भौतिक रूप से भी सम्पन्न रहेंगे। यद्यपि a की प्रवृति निराशावादी रहेगी परन्तु Ms. अपने प्रबल आशावाद से अप्रिय क्षणोa को दूर करके किंचित सुखद क्षणोa की प्राप्ति करने मेa समर्थ रहेंगी।

a का वश्य चतुष्पाद तथा Ms. का वश्य जलचर है। इसके प्रभाव से इनका दाम्पत्य जीवन आदर्श एवa उत्साह से पूर्ण रहेगा तथा a, Ms. की कामभावनाओa का आदर करते हुए उन्हेa पूर्ण रूप से प्रसन्न एवa सन्तुष्ट करने मेa समर्थ रहेंगे।

Ms. का वर्ण ब्राहमण तथा a का वर्ण क्षत्रिय है। अतः इनकी कार्य क्षमताओa एवa क्षेत्रोa मेa भिन्नता रहेगी। a जहाँ उत्साही पराक्रमी एवa साहसी कार्यो को करने मे रूचिशील रहेंगे वहाa Ms. अध्ययन अध्यापन शास्त्रीय या अन्य सत्कार्यो को करने मेa रूचिशील होंगी परन्तु इससे दाम्पत्य जीवन की शुभता पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

धन

a और Ms. की आर्थिक स्थिति पर तारा तथा भकूट का कोई भी शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से इच्छित धन एवa लाभ अर्जित करने मेa वे समर्थ होंगे तथा उनके लाभ मार्ग भी नित्य प्रशस्त रहेंगे। लेकिन Ms. पर मंगल का प्रभाव अच्छा नहीं रहेगा फलतः यदा कदा इनके द्वारा आर्थिक स्थिति मेa अल्प समय के लिए दम्पति को विषमता का आभास हो सकता है।

a की प्रवृति भी अनावश्यक व्यय करने की होगी तथा जुए या अन्य व्यसनोa मेa वे

अधिक व्यय करेंगे अतः यदि वे ऐसी प्रवृतियोa की उपेक्षा करेa तथा बुद्धिमतापूर्वक उपार्जित धन को व्यय करेa तो उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी तथा भौतिक सुख संसाधनोa का उपभोग करते हुए वे अपना जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत करने मेa समर्थ हो सकेंगे।

स्वास्थ्य

a की नाड़ी अन्त्य तथा Ms. की नाड़ी मध्य है। अतः इन पर नाड़ी दोष का कोई प्रभाव नहीं होगा तथा स्वास्थ्य इस ओर से सामान्य रहेगा परन्तु मंगल के प्रभाव से a का स्वास्थ्य प्रभावित होगा एवa समय समय पर वे हृदय रोग संबंधी परेशानी प्राप्त करेंगे। साथ ही पित या रक्त संबंधी कष्ट की भी अनुभूति होगी। धातु संबंधी रोगोa का भी a पर प्रभाव रहेगा एवa संभोग क्रिया मेa भी उन्हेa शिथिलता का आभास होगा जिससे दाम्पत्य जीवन मेa कलह तथा अशांति उत्पन्न हो सकती है। अतः उपरोक्त दोषोa मेa न्यूनता लाने के लिए a को नियमित रूप से हनुमानजी की पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए। इसके अतिरिक्त मूंगा धारण करना भी a के लिए श्रेयस्कर रहेगा।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से a और Ms. का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हेa उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमेa अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चोa के जन्म मेa भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने मेa आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त a और Ms. के पुत्र एवa कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय मेa Ms. के मन मेa पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Ms. को इस विषय मेa किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल मेa Ms. को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवa आकर्षक बच्चोa को जन्म देने मेa सफल होंगी। साथ ही स्वयa भी स्वस्थ एवa प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से a और Ms. सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र मेa अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमेa विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार a और Ms. का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Ms. के सास से प्रायः अच्छे संबध रहेंगे। यद्यपि उनकी सास अन्य जनोa के मामलोa मेa कम ही हस्तक्षेप करने वाली महिला होंगी तथापि उनके कुछ सिद्धांत Ms. के लिए अनुकरणीय हो सकते है। साथ ही इन दोनोa के मध्य कोई विशेष समस्या या मतभेद नहीं रहेंगे।

Ms. अपने कुशल व्यवहार मधुर वाणी एवa सेवा भाव से ससुर को प्रसन्न एवa सन्तुष्ट करने मेa सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही ननद एवa देवरोa के साथ भी उनके संबध मित्रता

पूर्ण रहेंगे तथा उनको पूर्ण सहयोग एवa स्नेह प्रदान करेंगी। अतः उनका दिल जीतने मेa सफल रहेंगी।

इस प्रकार Ms. के प्रति उनके सास ससुर का दृष्टि कोण आत्मयीता से पूर्ण रहेगा तथा घर मेa उसे पूर्ण सुख सुविधा तथा स्नेह प्रदान करेंगे।

ससुराल-श्री

a की अपनी सास से संबंधोa मेa मधुरता रहेगी। साथ ही उनके प्रति श्रद्धा सम्मान एवa सहयोग का भाव रहेगा। a सपत्नीक समय समय पर ससुराल के लोगोa से मिलने जाया करेंगे जिससे आपसी संबंधोa मेa मधुरता की वृद्धि होगी। साथ ही a का व्यवहार उनके प्रति विनम्रता से युक्त रहेगा।

ससुर के साथ भी a के संबंधोa मेa मधुरता का भाव रहेगा। साथ ही इन दोनोa के मध्य दामाद ससुर की अपेक्षा पिता पुत्र का भाव अधिक रहेगा। a भी समय समय पर अपने समस्याओa के समाधान के लिए ससुर से सलाह लेते रहेंगे लेकिन साले तथा सालियोa से संबंध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा उनसे यथोचित सम्मान तथा सहयोग की प्राप्ति अल्प मात्रा मेa ही होगी।

इस प्रकार ससुराल के लोगोa का दृष्टिकोण a के प्रति अनुकूल रहेगा जिससे उनके आपसी संबंध अनौपचारिक रहेंगे।